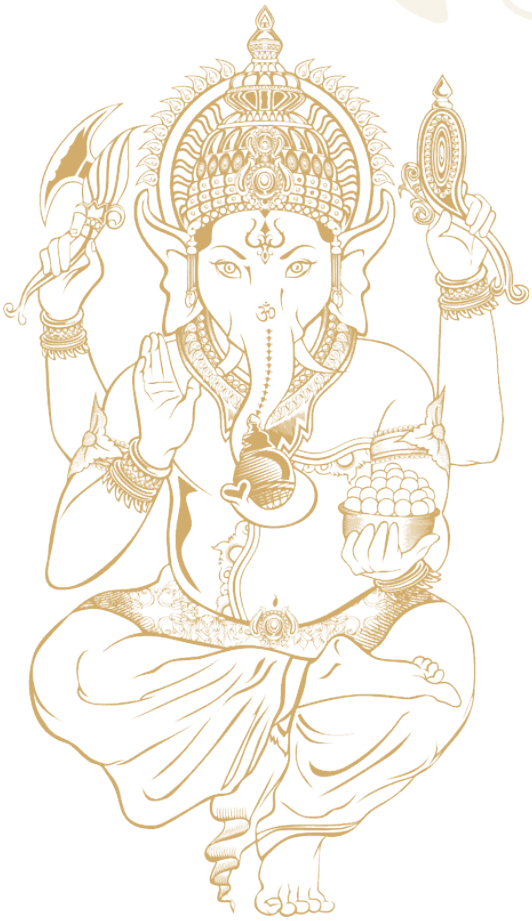

DIGVIJAY AAKRITI

Model: Horoscope-Matching

Order No: 119545901

Model: Horoscope-Matching

Order No: 119545901 Date: 24/09/2025

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
15-16/09/1996	जन्म तिथि	11/10/1995
रवि-सोमवार	दिन	बुधवार
घंटे 05:55:00	जन्म समय	08:53:00 घंटे
घटी 59:35:26	जन्म समय(घटी)	06:21:48 घटी
India	देश	India
Theog	स्थान	Jubbal
31:07:00 उत्तर	अक्षांश	31:05:00 उत्तर
77:21:00 पूर्व	रेखांश	77:40:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:20:36	स्थानिक संस्कार	-00:19:20 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:04:49	सूर्योदय	06:18:59
18:24:51	सूर्यास्त	17:53:06
23:48:42	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:00
सिंह	लग्न	तुला
सूर्य	लग्न लग्नाधिपति	शुक्र
तुला	राशि	मेष
शुक्र	राशि-स्वामी	मंगल
चित्रा	नक्षत्र	भरणी
मंगल	नक्षत्र स्वामी	शुक्र
4	चरण	3
ऐन्द्र	योग	वज्र
गर	करण	वणिज
री-रीतेश	जन्म नामाक्षर	ले-लेखा
कन्या	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	तुला
शूद्र	वर्ण	क्षत्रिय
मानव	वश्य	चतुष्पाद
व्याघ्र	योनि	गज
राक्षस	गण	मनुष्य
मध्य	नाड़ी	मध्य
मृग	वर्ग	मृग

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
मंगल 1वर्ष 0मा 23दि		26:33:08	सिंह	लग्न	तुला	25:21:33	शुक्र 6वर्ष 2मा 10दि	
गुरु		29:36:38	सिंह	सूर्य	कन्या	23:32:34	राहु	
10/10/2015		04:38:26	तुला	चंद्र	मेष	22:32:13	20/12/2024	
10/10/2031		10:02:41	कर्क	मंगल	तुला	29:17:45	21/12/2042	
गुरु	27/11/2017	02:42:22	कन्या व	बुध व	कन्या	11:57:25	राहु	02/09/2027
शनि	09/06/2020	14:15:07	धनु	गुरु	वृश्चि	18:18:44	गुरु	26/01/2030
बुध	15/09/2022	15:43:19	कर्क	शुक्र	तुला	07:12:55	शनि	02/12/2032
केतु	22/08/2023	10:59:13	मीन व	शनि व	कुंभ	25:37:11	बुध	21/06/2035
शुक्र	22/04/2026	14:10:32	कन्या	राहु	तुला	02:40:22	केतु	09/07/2036
सूर्य	08/02/2027	14:10:32	मीन	केतु	मेष	02:40:22	शुक्र	10/07/2039
चन्द्र	09/06/2028	07:03:54	मक व	हर्ष	मक	02:44:06	सूर्य	02/06/2040
मंगल	16/05/2029	01:16:47	मक व	नेप	धनु	28:59:03	चन्द्र	02/12/2041
राहु	10/10/2031	06:53:29	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	05:05:41	मंगल	21/12/2042

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:48:42 चित्रपक्षीय अयनांश 23:48:00

लग्न-चलित

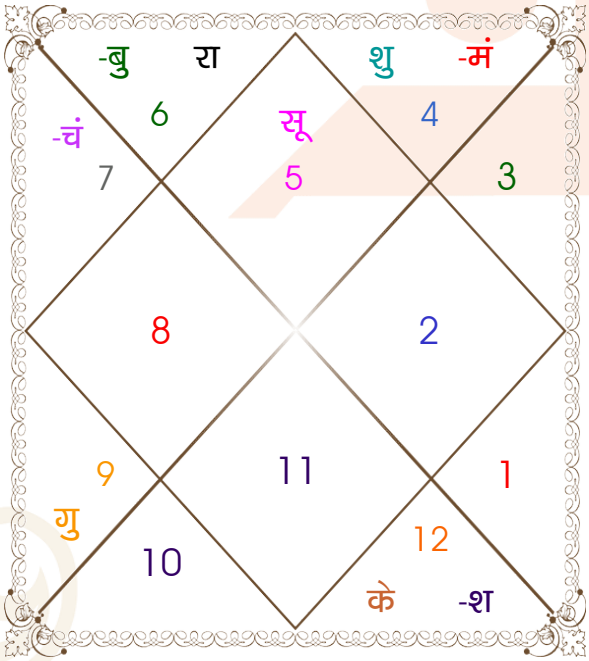

लग्न-चलित

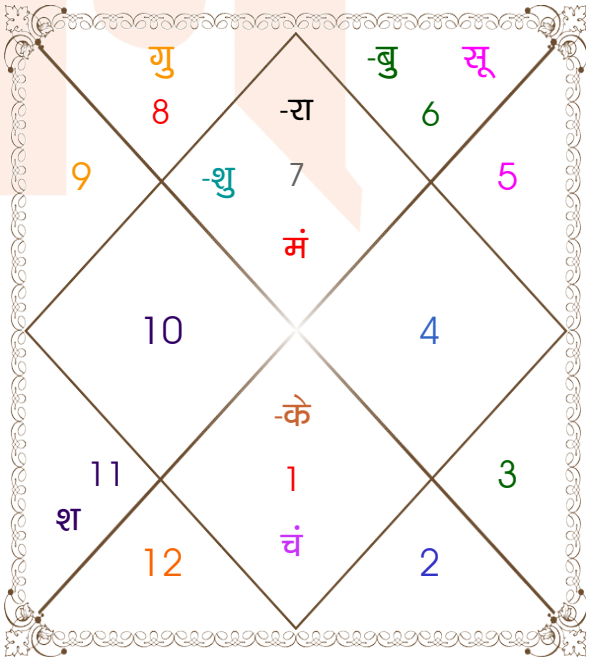

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	गज	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	मंगल	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	तुला	मेष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	13.50		

कुल : 13.5 / 36

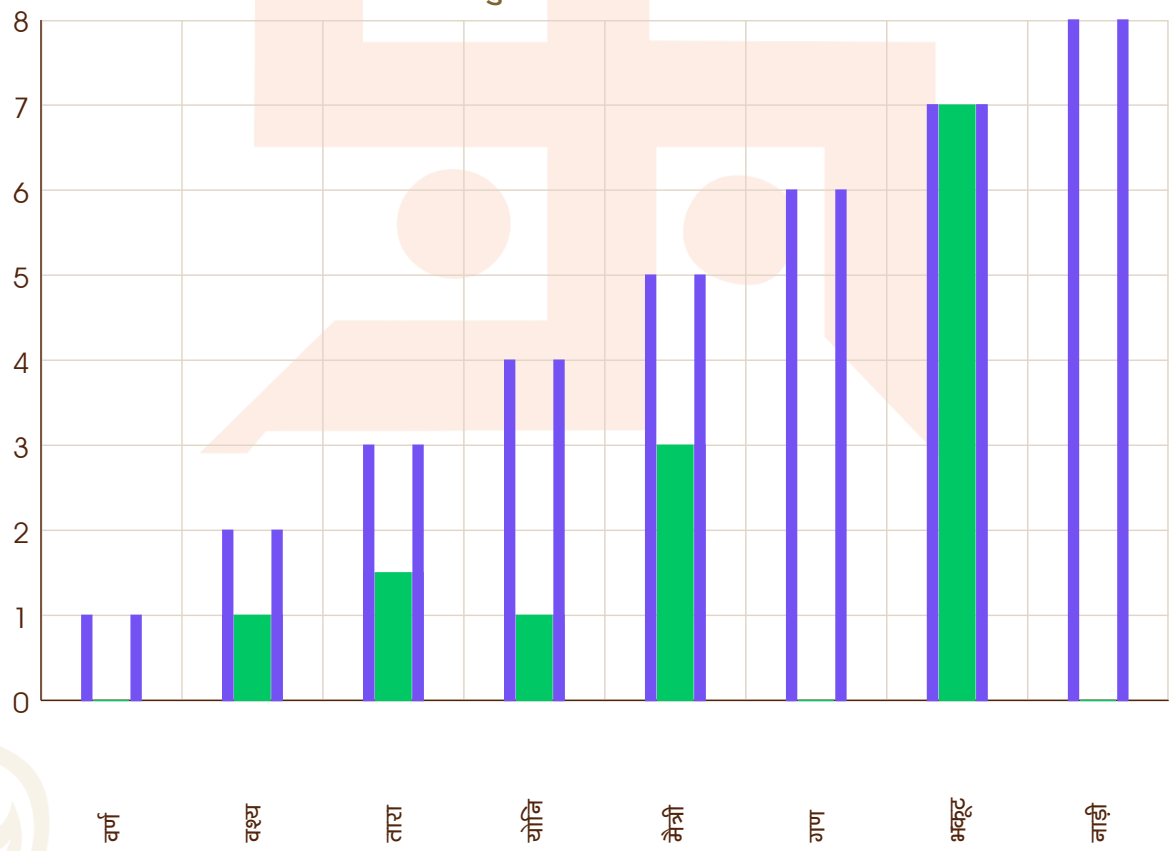

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

अष्टकूट मिलान

गणदोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता नहीं है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

DIGVIJAY का वर्ग मृग है तथा ।।ज्ञत्प्ज्प् का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार DIGVIJAY और ।।ज्ञत्प्ज्प् का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

DIGVIJAY मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल DIGVIJAY कि कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

ढप्ध्;डडत्मजतवह;0द्धझ0द्धझ क्योंकि मंगल DIGVIJAY कि कुण्डली में वक्री है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

।।ज्ञत्प्ज्प् मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु ।।ज्ञत्प्ज्प् कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

DIGVIJAY तथा ।।ज्ञत्प्ज्प् में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

DIGVIJAY का वर्ण शूद्र है तथा ।ज्ञत्प्ज्ञ का वर्ण क्षत्रिय है। इसमें ।ज्ञत्प्ज्ञ का वर्ण DIGVIJAY के वर्ण से नीचा नहीं है अतः यह मिलान उत्तम मिलान नहीं है। जिसके कारण ।ज्ञत्प्ज्ञ अति वर्चस्वशाली होगी तथा सिर्फ आज्ञा देने वाली होगी। दोनों के बीच सदैव संघर्ष एवं तर्क-वितर्क का दौर चलता रह सकता है तथा दोनों के बीच कभी-कभी मार-पीट भी हो सकती है। ।ज्ञत्प्ज्ञ का आक्रामक व्यवहार परिवार के सभी सदस्यों का जीना दूभर कर सकता है। परिवार में सुख-शान्ति की स्थापना के लिए DIGVIJAY को उसकी हर बात माननी होगी तथा गुलाम की भाँति रहना पड़ेगा।

वश्य

DIGVIJAY का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं ।ज्ञत्प्ज्ञ का वश्य चतुष्पद अर्थात पशु है अतः यह मिलान औसत मिलान होगा। यद्यपि कि जानवर एवं मनुष्य के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद अलग-अलग होते हैं फिर भी दोनों एक-दूसरे के सान्निध्य में जीवन व्यतीत करते हैं। फलस्वरूप DIGVIJAY एवं ।ज्ञत्प्ज्ञ दोनों प्रेम एवं सौहार्द के साथ एक-दूसरे के साथ जीवन व्यतीत कर सकेंगे। ।ज्ञत्प्ज्ञ अपने पति की हर आज्ञा शिरोधार्य करेगी तथा बदले में DIGVIJAY अपनी पत्नी की देखभाल करेगा तथा उसे प्रेम प्रदान करेगा।

तारा

DIGVIJAY की तारा क्षेम तथा ।ज्ञत्प्ज्ञ की तारा वध है। ।ज्ञत्प्ज्ञ की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसे में यह विवाह DIGVIJAY एवं ।ज्ञत्प्ज्ञ दोनों के लिए दुर्भाग्य के द्वार खोल सकता है। ।ज्ञत्प्ज्ञ अपने पति एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्यशाली साबित हो सकती है। अतः संभव है कि घर में निरंतर दुःखदायी घटनाओं का क्रम चलता रहे। जिससे घर में दुःख एवं पीड़ा के वातावरण का निर्माण हो सकता है। ऐसी स्थिति में बच्चे भी काफी कष्ट भुगत सकते हैं तथा सफलता प्राप्ति के लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है।

योनि

DIGVIJAY की योनि व्याघ्र है तथा ।ज्ञत्प्ज्ञ की योनि गज है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग- अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में DIGVIJAY एवं ।ङ्गत्प्ज्ञ दोनों के राशि स्वामी परस्पर सम हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से औसत मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यह मिलान औसत माना जायेगा। इसके कारण जीवन एवं करियर में हमेशा उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों के बीच प्रेम एवं सहयोग का माहौल रहेगा किंतु यदा-कदा आपस में ये लड़ाई-झगड़ा भी कर सकते हैं। हालांकि ये जल्दी ही अपने झगड़े को भुलाकर समझौता भी कर लेंगे तथा जीवन पथ पर आगे बढते रहेंगे। सफलता पाने के लिए इनको अथक परिश्रम एवं उद्य म करना पड़ सकता है।

गण

DIGVIJAY का गण राक्षस है तथा ।ङ्गत्प्ज्ञ का गण मनुष्य है। अर्थात ।ङ्गत्प्ज्ञ का गण DIGVIJAY के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान बहुत बुरा मिलान रहेगा। ज्योतिषीय दृष्टि से यह संबंध अधिक दिनों तक नहीं रहने वाला होगा। दोनों के वैचारिक मतभेद परिवार के सदस्यों के जीवन को अशांत बना सकते हैं। ऐसा विवाह त्याज्य है।

भकूट

DIGVIJAY एवं ।ङ्गत्प्ज्ञ की राशियां एक दूसरे से सम सप्तक (1/7) हैं। जिसके कारण इस मिलान को अति उत्तम मिलान माना जाता है। ज्योतिष की दृष्टि से यह मिलान अति शुभ है तथा DIGVIJAY व ।ङ्गत्प्ज्ञ को शांति, सुख, सौभाग्य, समृद्धि, योग्य संतान एवं चतुर्दिक विकास के अवसरसमय-समय पर मिलते रहेंगे। साथ ही दोनों के बीच असीम प्यार बना रहेगा तथा दोनों हर कार्य में एक-दूसरे की मदद करते रहेंगे।

नाड़ी

DIGVIJAY की नाड़ी मध्य है तथा ।ङ्गत्प्ज्ञ की नाड़ी भी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान हैं, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। यदि पति-पत्नी की समान नाड़ी मध्य ही होगी तो पति अथवा पत्नी में से किसी की मृत्यु की संभावना होती है। ऐसी स्थिति में DIGVIJAY एवं ।ङ्गत्प्ज्ञ का विवाह अति घातक हो सकता है। आपकी संतान कमजोर, डरपोक, मानसिक रूप से असंतुलित, मानसिक बीमारी से ग्रस्त हो सकती हैं। अतः ऐसा विवाह पूर्णतः त्याज्य है।

मेलापक फलित

स्वभाव

DIGVIJAY की जन्म राशि वायुतत्व युक्त तुला तथा ।ज्ञत्प्ज्ञ की राशि अग्नि तत्व युक्त मेष राशि है। वायु एवं अग्नि की परस्पर मित्रता के कारण DIGVIJAY और ।ज्ञत्प्ज्ञ के मध्य स्वभावगत समानताएं रहेंगी तथा दाम्पत्य संबधों में भी मधुरता होगी जिससे इनका वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा। अतः मिलान शुभ रहेगा।

DIGVIJAY की राशि का स्वामी शुक्र तथा ।ज्ञत्प्ज्ञ की राशि का स्वामी मंगल परस्पर समराशियों में स्थित है। अतः इसके प्रभाव से DIGVIJAY और ।ज्ञत्प्ज्ञ का गृहस्थ सुख अच्छा रहेगा। साथ ही एक दूसरे के प्रति मन में प्रेम सहयोग एवं समर्पण का होगा। ये सदगुणों की आपस में प्रशंसा करेंगे तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे जिससे परस्पर संबधों की मधुरता में वृद्धि होगी परन्तु यदा कदा आपस में उदासीनता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे लेकिन इसका सुखी वैवाहिक जीवन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

DIGVIJAY और ।ज्ञत्प्ज्ञ की राशियां परस्पर सप्तम से सप्तम भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना गया है। इसके प्रभाव से परस्पर संबधों में प्रगाढ़ता रहेगी तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर होंगे। एक दूसरे के आस्तित्व का ये पूर्ण सम्मान करेंगे तथा समानता के सिद्धांतो पर ही व्यवहार भी करेंगे जिससे वैवाहिक जीवन में मधुरता बनी रहेगी।

DIGVIJAY का वश्य मानव तथा ।ज्ञत्प्ज्ञ का वश्य चतुष्पद है। नैसर्गिक रूप से मानव तथा चतुष्पद में असमानता तथा शत्रुता का भाव विद्यमान रहता है। अतः इसके प्रभाव से DIGVIJAY और ।ज्ञत्प्ज्ञ की अभिरूचियों में अंतर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी विषमता रहेगी फलतः दाम्पत्य संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ रहेंगे।

DIGVIJAY का वर्ण शूद्र तथा ।ज्ञत्प्ज्ञ का वर्ण क्षत्रिय है। अतः इनकी कार्य क्षमताओं में असमानता होगी ।DIGVIJAY की प्रवृति किसी भी कार्य को ईमानदारी तथा परिश्रम पूर्वक करने की रहेगी तथा ।ज्ञत्प्ज्ञ साहसिक तथा पराक्रमी कार्यो को करने में रूचिशील होंगी।

धन

DIGVIJAY और ।ज्ञत्प्ज्ञ की तारा सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। इन पर भकूट का प्रभाव भी सम ही होगा लेकिन DIGVIJAY पर मंगल का अशुभ प्रभाव रहेगा जिसके प्रभाव से समय समय पर आर्थिक उतार चढ़ाव का सामना कर सकते है। साथ ही लाभ एवं आय स्रोतों में भी व्यवधान उत्पन्न होंगे।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

इसके अतिरिक्त DIGVIJAY की प्रवृति अनावश्यक रूप से व्यय करने की भी होगी जिसका आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अतः उन्हें चाहिए कि अनावश्यक व्यय की इस प्रवृति पर नियंत्रण रखें तभी उनकी आर्थिक स्थिति अनुकूल रह सकती है।

स्वास्थ्य

DIGVIJAY और ।ज्ञत्प्ज्ञ एक ही नाड़ी में उत्पन्न हुए है। अतः नाड़ी दोष का इन पर दुष्प्रभाव रहेगा जिससे इनको स्वास्थ्य संबंधी गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। साथ ही मंगल भी दोनों के स्वास्थ्य को प्रभावित करेगा जिससे वे रक्त एवं पित संबंधी कष्ट प्राप्त करेंगे। वे उदर संबंधी कष्ट से भी यदा कदा असुविधा प्राप्त करेंगे। मंगल के प्रभाव से भी इनका स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा। इससे दोनों गुप्त या धातु संबंधी रोगों से पीड़ित रहेंगे एवं रक्तपित का भी प्रकोप रहेगा। साथ ही काम संबंधों में भी शिथिलता तथा उदासीनता के भाव से DIGVIJAY और ।ज्ञत्प्ज्ञ असन्तुष्ट रहेंगे। अतः ऐसी स्थिति में विवाह नहीं करना चाहिए तथापि उपरोक्त फलों में न्यूनता के लिए हनुमानजी का पूजन तथा मंगलवार के उपवास करने से किंचित शुभता रहेगी।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से DIGVIJAY और ।ज्ञत्प्ज्ञ का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त DIGVIJAY और ।ज्ञत्प्ज्ञ के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में ।ज्ञत्प्ज्ञ के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन ।ज्ञत्प्ज्ञ को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में ।ज्ञत्प्ज्ञ को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से DIGVIJAY और ।ज्ञत्प्ज्ञ सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार DIGVIJAY और ।ज्ञत्प्ज्ञ का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

।ज्ञत्प्ज्ञ के सास के साथ संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे। साथ ही आयु में पर्याप्त

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

अन्तर होने के कारण इन के मध्य अनावश्यक मतभेद रहेंगे। लेकिन यदि दोनों परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता से व्यवहार करेंगे तो संबधों में मधुरता की वृद्धि होगी तथा तनाव में न्यूनता आएगी।

ससुर से भी ।ज्ञत्प्ज्प् को इच्छित स्नेह तथा सहानुभूति अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी। अतः ।ज्ञत्प्ज्प् को चाहिए कि ससुर की सेवा, सुख सुविधा तथा आराम का पूर्ण ध्यान रखें। इससे उनसे स्नेह के भाव में वृद्धि हो सकती है। लेकिन देवर तथा ननदों के साथ ।ज्ञत्प्ज्प् के संबध अच्छे रहेंगे तथा परस्पर सार्थक सामंजस्य का भाव रहेगा तथा मित्रता पूर्ण व्यवहार करके उनसे स्नेह तथा सहानुभूति को प्राप्त करेंगी। इन संबधों से ।ज्ञत्प्ज्प् सास ससुर से भी इच्छित स्नेह की प्राप्ति करने में समर्थ हो सकती है इस प्रकार ससुराल में इनका जीवन सामान्यतया सुखी ही रहेगा।

ससुराल-श्री

DIGVIJAY के अपनी सास से संबधों में मधुरता रहेगी तथा सास को वह अपनी माता के समान पूर्ण आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। वह उन्हें अपने पुत्र के समान समझेंगी तथा उसी प्रकार अपनत्व तथा वात्सल्य प्रदान करेंगी। साथ ही समय समय पर वे सपत्नीक सास से मिलने के लिए ससुराल जाते रहेंगे।

लेकिन ससुर के साथ में DIGVIJAY के संबध अच्छे नहीं रहेंगे। इनकी आयु में अधिक अंतर के कारण वैचारिक तथा सैद्धांतिक मतभेद समय समय पर उत्पन्न होते रहेंगे। लेकिन यदि दोनों सामंजस्य की प्रवृति से कार्य लें तो मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा मधुर संबधों में वृद्धि होगी। साथ ही साले एवं सालियों से भी संबधों में तनाव रहेगा तथा मानसिक स्तर पर विभिन्नता रहेगी जिससे एक दूसरे को वांछित सहयोग स्नेह एवं सहानुभूति अल्प ही प्रदान करेंगे। अतः इनको परस्पर सामंजस्य के भाव की स्थापना करनी चाहिए। इस प्रकार ससुराल पक्ष का दृष्टिकोण DIGVIJAY के प्रति सामान्य ही रहेगा।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com